बृज क्षेत्र के कतिपय चयनित गायक कलाकारों का सांगीतिक योगदान: एक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा से संगीत में
पी-एच0डी0 की उपाधि हेतु
शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी
प्रियंका कुमारी

शोध सह-निर्देशक
डॉ. गौतम तिवारी
ऐसो0 प्रोफेसर
संगीत-विभाग

शोध निर्देशक:
प्रो. रवि कुमार भटनागर
संगीत विभाग

संगीत-विभाग, कला-संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा-282005

2022

1.0 भूमिका-

बृज क्षेत्र उत्तर भारतीय गायन-शैली के लिये एक सुविख्यात एवं सुप्रसिद्ध क्षेत्र है। बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों ने जहाँ एक ओर भक्ति-संगीत के लिये अपना कीर्तिमान स्थान स्थापित किया है, वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्र के मूर्धन्य गायक कलाकारों द्वारा अन्य विभिन्न गायन-शैलियों को प्रचारित एवं प्रसारित करने में अपनी विशेष भूमिका निभाई है। बृज क्षेत्र का अधिकांशतः संगीत की गायकी का प्रचार-प्रसार बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों द्वारा ही सम्भव हो पाया है। बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों का विभिन्न गायन क्षेत्रों में, जैसे- शास्त्रीय संगीत, हवेली संगीत, सुगम-संगीत, लोकसंगीत, आदि में अपना एक विशेष महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

प्राचीनकाल से लेकर वर्तमानकाल तक भिन्न-भिन्न गायक कलाकारों द्वारा संगीत को प्रचार-प्रसार में लाने का श्रेय एवं योगदान बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों को दिया जाये तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस क्षेत्र के कलाकारों ने अपने प्रयास-स्वरुप गायकी के क्षेत्र में संगीत को रुचिकर एवं महत्वपूर्ण बनाने के लिये अपना महती योगदान देने में अपनी अहम् भूमिका निभाई है। जहाँ एक ओर होली संगीत के प्रयुक्तिकरण के लिये बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों द्वारा कृष्ण एवं गोपियों के वर्णन में सौन्दर्यात्मक तत्वों का सरल एवं सहज वर्णन दृष्टिगोचर होता है तो वहीं उनके द्वारा भक्ति-संगीत के लिये रचनात्मक एवं भावपक्ष के कौशल का वर्णन प्राप्त होता है।

बृज क्षेत्र अधिकांशतः भक्ति गायन-शैली के लिये एक सुविख्यात एवं प्रसिद्ध क्षेत्र है। चूँकि बृज भूमि धर्मस्थल एवं तीर्थस्थल के लिये विशेष रूप से जानी जाती है, अतः इस क्षेत्र में भक्ति-संगीत का प्रभाव अधिक दृष्टिगत होता है किन्तु भक्ति-संगीत के साथ ही संगीत के अन्य क्षेत्र में भी यहाँ प्रचुर मात्रा में कार्य होता रहा है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकत्री ने अपने शोध-प्रबन्ध हेतु बृज क्षेत्र के शास्त्रीय संगीत, हवेली संगीत, लोक संगीत तथा सुगम संगीत गायक कलाकारों पर अध्ययन करने का उद्देश्य बनाया है। शोधकत्री का विचार है कि बृज क्षेत्र का संगीत इस क्षेत्र के विभिन्न मूर्धन्य गायक कलाकारों का संगीत के लिये उनके द्वारा दिया गया योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये योगदान कितना एवं कहाँ तक दृष्टिगोचर होता है,तथा उनके द्वारा

दिये गये सांगीतिक योगदान से संगीत का प्रचार-प्रसार कहाँ तक सम्भव हो पाया है, यह तथ्य विचारणीय है। बृज क्षेत्र के श्रेणीगत गायक कलाकारों के अपने कलात्मक विचार, रचनात्मकता, भावात्मकता एवं स्वर-विन्यास से परिष्कृत विभिन्न गायन-शैलियों में किये गये, संगीतात्मक योगदान का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है।

अतः उपर्युक्त समस्त तथ्यों के आधार पर कह सकते हैं कि शोध की दृष्टि से यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है। बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों ने न केवल बृज क्षेत्र में ही अपना सांगीतिक योगदान दिया है, अपितु उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में भी अपना विशेष एवं महत्वपूर्ण आधिपत्य स्थान प्राप्त किया है, किन्तु चिन्ता का विषय यह है कि इस क्षेत्र के गायक कलाकारों की कला को विशेष प्रचार नही मिल पाया, अस्तु इसे प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। इसको दृष्टिगत करते हुए विभिन्न गायन-शैलियों में बृज क्षेत्र के कलाकारों द्वारा दिये गये महत्वपूर्ण योगदान के महत्व को विचार में रखते हुए तथा इस क्षेत्र के मूर्धन्य गायक कलाकारों को प्रकाश में लाने हेतु शोधकर्त्री के मस्तिष्क में विभिन्न प्रश्न उजागर हुए कि-

बृज क्षेत्र के गायक कलाकार संगीत की किन-किन विधाओं में है।

बृज क्षेत्र में अधिकतर कौन-कौन सी गायन शैलियों के कलाकार हैं।

बृज क्षेत्र के गायक कलाकार अधिकतर किन गायन-शैलियों में विशेष रुचि रखते हैं।

बृज क्षेत्रीय संगीत के गायक कलाकारों का कितना और क्या सांगीतिक योगदान है।

बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों द्वारा विभिन्न गायन-शैलियों को कहाँ तक और कितना प्रचार-प्रसार में लाया गया है।

बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों का मंच प्रदर्शनीय गायन कितना प्रासंगिक है।

बृज क्षेत्रीय गायक कलाकारों की गायकी से सम्बन्धित उनके अपने विचार क्या हैं।

इस क्षेत्र के कलाकारों के विचार गायन संगीत को कहाँ तक प्रचार-प्रसार में ला सकते हैं।

उपर्युक्त कतिपय महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर जिज्ञासा हेतु शोधकर्त्री के मस्तिष्क में कल्पित हुए विचार से बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों के सांगीतिक योगदान का गहन अध्ययन करने हेतु इस क्षेत्र के विभिन्न गायक

कलाकारों के सांगीतिक योगदान को विस्तार से जानने के लिये शोधकर्त्री द्वारा निम्न विषय का चयन किया गया।

2.0 विषय कथन-

''बृज क्षेत्र के कतिपय चयनित गायक कलाकारों का सांगीतिक योगदानः एक अध्ययन''

बृज क्षेत्र में अनेक ऐसे प्रतिभा सम्पन्न गायक कलाकार हुये हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा, संगीत के प्रति कार्यनिष्ठा, साधना एवं वहाँ की संस्कृति के प्रति अपना समर्पण भाव देने में अपनी अहम भूमिका निभाई है। इस क्षेत्र के गायक कलाकारों ने यहाँ के लोक-संगीत की अनेक विधाओं से जीवन प्रदान करके उनको संरक्षित रखा है। अतः इन कलाकारों द्वारा संगीत के क्षेत्र में दिये गये भिन्न-भिन्न प्रकार के सांगीतिक योगदान के विषय में जानने एवं ज्ञान अर्जित करने हेतु गहन अध्ययन की आवश्यकता है।

3.0 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण-

बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों का सांगीतिक योगदान पर शोध समस्या के चयन हेतु, सर्वप्रथम शोधकर्त्री द्वारा सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया तथा साहित्य के सर्वेक्षण के उपरान्त निम्न साहित्य उद्घाटित हुआ -

- बृजरास के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, आरती श्रीवास्तव, दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग़ आगरा, -2018
- बृज के लोकनाट्य भगत का सांगीतिक अध्ययन, निम्मी गुप्ता, दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग़ आगरा, -2018
- बृज प्रदेश के जन्म एवं विवाह संस्कार सम्बन्धी लोकगीतों का अध्ययन, मधुमिता त्रिवेदी, दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग़ आगरा, -2018
- बृज प्रदेश के प्रमुख ऋतु पर्वों के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अल्का वार्ष्णेय, दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग़ आगरा, -2018

- बृज भूमि की मल्हार गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन, मोहिनी राजपूत, दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग़ आगरा।
- बृज लोक संगीत का सौन्दर्यात्मक अध्ययन, जया तिवारी, छत्रपति साहूजी महाराज-2019
- बृज क्षेत्र के संगीत की भारतीय संस्कृति के विकास में भूमिका, परमजीत कौर, गुरू नानक विश्वविद्यालय, अमृतसर-2013
- बृज की होली का सांगीतिक अध्ययन, वन्दना तैलंग, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा-1993
- बृज के रसियों का अध्ययन, उषाराम बनर्जी, बनारस हिन्दूविश्वविद्यालय-1987
- बृज के लोककाव्य में वृन्दावन के संगीत साहित्य का योगदान, आर0डी0 शर्मा, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा-1984
- बृज के लोकगीतों का सांगीतिक अध्ययन, अनिता शर्मा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर- 2003
- बृज लोकसंगीत के क्षेत्र में हाथरस का योगदान, निशा रावत, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा-2002
- बृज की गायन शैलियाँ, परम्पराएँ एवं उनकी उपयोगिता, ममता सिंह, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ-1998
- बृज के (रसान्वयी) संगीत का परिवर्तनात्मक स्वरूप एक अध्ययन: आधुनिक काल के विशेष सन्दर्भ में, श्वेता शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2013
- बृज के भक्ति सम्प्रदायों का समाज-गायन, अंजू शर्मा, दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग़ आगरा-1999

3.1 पुस्तकें-

- बृज संस्कृति और लोकसंगीत, डॉ0 शिवशंकर गुप्त, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय।
- बृज संस्कृति में संगीत, अन्जू शर्मा।
- बृज में होरी तथा सावन के अन्य गीत प्रकारों का सौन्दर्यात्मक अध्ययन, दत्ता अमृता।

- बृज के देवालयों में संगीत परम्परा, डॉ0 राकेश बाला सक्सेना।
- हरियाणवी और बृज लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययनः डॉ0 दिलबाग सिंह।
- बृज लोक संगीत, डॉ0 निशा रावत।
- बृज लोक गीतों में रस-योजना, डॉ0 चन्द्रमोहन।
- बृज लोक साहित्य और संस्कृति, डॉ0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी।
- बृज लोक गीत उत्तर प्रदेश, राजेन्द्र चतुर्वेदी रंजन।
- बृजरास में संगीत उत्पत्ति; विकास और स्वरूप, आरती श्रीवास्तव।
- बृज के लोकगीत एवं लोकपर्वों का सांगीतिक अध्ययन, डॉ0 वन्दना तैलंग।
- बृज के लोकगीतों का मौन मनोविश्लेषण, डॉ0 रामसिंह।
- बृज बल्लरी विलास, आचार्य बृहस्पति।
- बृज संगीत सुगन्ध, डॉ0 सत्या भार्गव।
- बृज की संगीत परम्परा, डॉ0 वन्दना सिंह।
- बृज और बुन्देली लोकगीतों में कृष्ण कथा, डॉ0 शालिग्राम गुप्ता।

3.2 समाचार पत्र-पत्रिकाएँ-

- बृज की रास-लीला-प्रारल्य, संगीत अंक नवम्बर, 2013
- विश्व संगीत अंक- 1-2, जनवरी-फरवरी, 1985

3.3 **Websites -**

- www.jagran.com
- www.amarujala.com
- www.wikipedia.com

उपर्युक्त साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात् शोधकर्त्री को यह ज्ञात हुआ कि बृज क्षेत्र से सम्बन्धित जो कार्य हुए हैं उनमें संगीत-साहित्य का अधिक प्रादुर्भाव होता है तथा साथ ही साथ इस क्षेत्र के लोक संगीत व

लोक संस्कृति संगीत तथा बृज भाषा से सम्बन्धित संगीत साहित्य में सामग्री प्राप्त होती है। बृज क्षेत्र के लोक संगीत व लोक संस्कृति को लेकर विभिन्न सांगीतिक पुस्तकें प्राप्त होती हैं, जैसे-डॉ0 अंजु शर्मा की पुस्तक 'बृज संस्कृति में संगीत' तथा डॉ0 शिवशंकर जी की पुस्तक 'बृज-संस्कृति और लोक संगीत' आदि, किन्तु बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों के सांगीतिक योगदान से सम्बन्धित शोधकर्त्री को कोई भी पुस्तक एवं सहायक सामग्री प्राप्त नहीं होती, अतः शोधकर्त्री को सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से अपने प्रस्तावित शोध कार्य से सम्बन्धित सामग्री का नितान्त अभाव प्राप्त होता है। शोधकर्त्री के संज्ञान में जो साहित्य यत्र-तत्र प्राप्त हुआ, उसका उल्लेख शोधकर्त्री द्वारा यथासम्भव किया जा चुका है।

बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों के विषय में जिज्ञासा हेतु इस क्षेत्र के गायक कलाकारों की प्रतिभा सम्पन्ननिष्ठा, संगीत-साधना एवं संस्कृति के समर्पण भाव को जानने हेतु, बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों के सांगीतिक योगदान को सूक्ष्मता से जानने हेतु एवं इस क्षेत्र के गायक कलाकारों की भावनात्मक एवं संवेदनात्मक प्रतिभा को प्रकाश में लाने हेतु इस विषय का चयन किया गया।

4.0 अध्ययन का महत्व-

बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों के भिन्न-भिन्न सांगीतिक क्षेत्रों में दिये गये अमूल्य योगदान एवं उनके द्वारा किये गये सांगीतिक प्रचार-प्रसार को प्रकाश में लाने हेतु शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तावित शोध महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। शोध कार्य में भिन्न-भिन्न गायक कलाकारों द्वारा दिये गये सांगीतिक योगदान, उनकी संगीत के प्रति निष्ठा, भक्ति-भावना एवं कर्तव्यपरायणता के द्वारा विभिन्न सांगीतिक कलाकारों का महत्व एवं उनका योगदान परिलक्षित होगा। सम्बन्धित शोध अध्ययन से प्राप्त हुई सामग्री भविष्य में आने वाले शोधार्थियों हेतु भी अत्यन्त लाभकारी एवं सहायक होगी।

5.0 अध्ययन के उद्देश्य-

1. बृज क्षेत्र के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सांगीतिक पक्ष का अध्ययन करना।
2. बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों द्वारा साक्षात्कार प्राप्त कर शोध हेतु सूचनाएँ एकत्रित करना।

3. बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों की विभिन्न गायन-शैलियों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।

4. बृज क्षेत्र के चयनित गायक कलाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।

5. बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों द्वारा गायन सम्बन्धी प्राप्त संगीत के क्रियात्मक पक्ष का स्वरांकन करना।

6.0 अध्ययन का परिसीमांकन-

कार्य एवं समय सीमा को ध्यान में रखते हुये, शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन में बृज क्षेत्र के गायक कलाकारों के शास्त्रीय-संगीत, हवेली-संगीत, लोक-संगीत तथा सुगम-संगीत की गायन शैलियों के लिए दो-दो कलाकारों का चयन किया जाएगा।

7.0 अध्ययन के स्त्रोत, कार्यविधि एवं उपकरण-

स्त्रोत - शोधकर्त्री द्वारा विभिन्न उपलब्ध ग्रन्थों, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं एवं विभिन्न साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन किया जायेगा तथा अध्ययन से सम्बन्धित संगीत-जगत के विभिन्न विद्वानों से सम्पर्क कर उनके विचारों को भी संग्रहीत किया जायेगा।

कार्यविधि- प्रस्तावित शोध हेतु वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, सर्वेक्षणात्मक एवं साक्षात्कार कार्यविधि का प्रयोग किया जायेगा।

उपकरण- शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तावित शोध-अध्ययन हेतु प्रश्नावली, साक्षात्कार, अनुसूची एवं दूरसंचार के माध्यमों को प्रयोग में लाया जायेगा। इसके अतिरिक्त अन्य उपकरणों में सी0डी0, डी0वी0डी0, कम्प्यूटर, वेब सामग्री, यू-ट्यूब चैनल, वीडियो कैमरा, चित्र, कैमरा इत्यादि का प्रयोग किया जायेगा।

8.0 अध्यायों का विभाजन-

भूमिका एवं साहित्य का सर्वेक्षण

प्रथम अध्याय-

बृज क्षेत्र का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सांगीतिक पक्ष का अध्ययन।

द्वितीय अध्याय-

बृज क्षेत्र की प्रमुख गायन-शैलियों का अध्ययन।

तृतीय अध्याय-

बृज क्षेत्र के चयनित गायक कलाकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

1. बृज क्षेत्र के शास्त्रीय संगीत -प्रधान गायकों का योगदान।

2. बृज क्षेत्र के हवेली संगीत -प्रधान गायकों का योगदान।

चतुर्थ अध्याय-

1. बृज क्षेत्र के लोक-संगीत- प्रधान गायकों का योगदान।

2. बृज क्षेत्र के सुगम संगीत - प्रधान गायकों का योगदान।

पंचम अध्याय-

बृज क्षेत्र के चयनित गायक कलाकारों द्वारा प्रदत्त क्रियात्मक पक्ष का स्वरांकन ।

निष्कर्ष

9.0 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

पुस्तकें-

1. गुप्त, डॉ0 शिवशंकर, बृज-संस्कृति और लोक संगीत, तिलकधारी, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर विश्वविद्यालय, वाराणसी प्रकाशन।

2. शर्मा अन्जू (1996), बृज-संस्कृति में संगीत, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

3. मधुकर, मोहनलाल, बृज लोक वैभव, राजस्थान बृजभाषा अकादमी, संगीत कार्यालय हाथरस।

4. सिंह, डॉ0 दिलबाग, हरियाणवी और बृज लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली।

5. रंजन चतुर्वेदी, राजेन्द्र (1919), बृज लोकगीत उत्तर प्रदेश, संगीत नाटक अकादमी।

6. रावत, डॉ0 निशा (1996), बृज लोक संगीत, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।

7. गर्ग, डॉ0 लक्ष्मी नारायण (2009), बृज संस्कृति और लोकसंगीत, संगीत कार्यालय हाथरस।

शोध प्रबन्ध-

1. श्रीवास्तव, आरती (2018), बृजरास के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, आगरा दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट।

2. गुप्ता, निम्मी (2018), बृज के लोकनाट्य भगत का सांगीतिक अध्ययन, आगरा दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट।

3. वाष्र्णेय, अल्का (2018), बृज प्रदेश के प्रमुख ऋतु पर्वों के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, आगरा दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट।

4. शर्मा, अन्जू (2018), बृज के भक्ति सम्प्रदायों का समाज गायन, आगरा दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट।

5. तिवारी, जया (2019), बृज लोक संगीत का सौन्दर्यात्मक अध्ययन,छत्रपति साहूजी महाराज यूनीवर्सिटी।

6. कौर, परमजीत (2013), बृज क्षेत्र के संगीत की भारतीय संस्कृति के विकास में भूमिका, अमृतसर, गुरू नानक विश्वविद्यालय।

7. तैलंग, वन्दना (1993), बृज की होली का सांगीतिक अध्ययन, आगरा, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय।

8. बनर्जी, उषाराम (1987), बृज के रसियों का अध्ययन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय।

9. शर्मा, आर0डी0 (1984), बृज के लोककाव्य में वृन्दावन के संगीत साहित्य का योगदान, आगरा, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय।

10. शर्मा, अनिता (2003), बृज के लोकगीतों का सांगीतिक अध्ययन, जयपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय।

11. रावत, निशा (2002), बृज लोकसंगीत के क्षेत्र में हाथरस का योगदान, आगरा, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय।

12. सिंह, ममता (1998), बृज की गायन शैलियाँ, परम्पराएँ एवं उनकी उपयोगिता, मेरठ, मेरठ विश्वविद्यालय।

13. शर्मा, श्वेता (2013), बृज के (रसान्वयी) संगीत का परिवर्तनात्मक स्वरूप एक अध्ययन: आधुनिककाल के विशेष सन्दर्भ में, दिल्ली विश्वविद्यालय।